



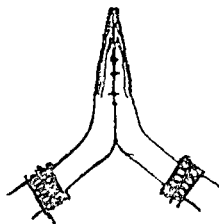
Gram RATHAN

Phone 560923
561223

Cosmopolitan Trading Corpn.

Jewellers, Exporters & Importers of Precious &
Semi Precious Stones

SPECIALISTS IN EMERALDS

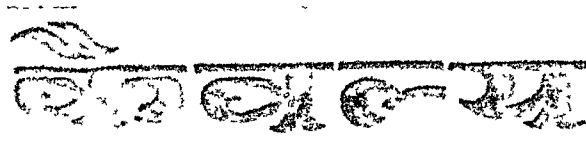


DHANRAJ MAHAL

3827, M S B Ka Rasta

Post Box No 27

Johari Bazar Jaipur - 302 003



क्षमापना दिवस के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका

सम्पादक मण्डल

- | | |
|--------------------------|----------------------------|
| 1. डॉ. नरेन्द्र भानावत | 2. श्रीमती सन्तोष पटवा |
| 3. श्री सुधीन्द्र भोसावत | 4. श्री प्रवीण लोढा |
| 5. श्री सुनील मुणोत | 6. श्री उत्तमचन्द्र चपतावत |



विज्ञापन मण्डल

- | | |
|-------------------------------------|----------------------------|
| 1. श्री कृष्णकान्त मेहता | |
| 2. श्री जयकुमार लोढा | 3. श्री गिनाप चन्द्र जैन |
| 4. श्री गुरेन्द्र कुमार जैन | 5. श्री सुजीवन सूजन |
| 6. श्री फतेहसिंह वरदािया | 7. श्री रमेश कुमार नण्डागी |
| 8. श्री सुधीनचन्द्र सिंघी | 9. श्री शरद चौरािया |
| 10. श्री नुरेन्द्र कुमार जैन (C.A.) | 11. श्रीमती मंजु पगनिया |

प्रकाशक

श्री जैन प्रबोधास्वर संघ (संस्था)

सहाय्यीय वाचनालय संघ, स. 4, 2मं, गुरुकुल के पास

जयपुर नगर, जयपुर-302 004 (राज.)



विकास सराहनीय

उमं नाम । मह विदिन हो ति आपता पन मिना ।
समाचार जाने ।

महावीर साधना विन्द्र मे विभिन्न जैन सप्रदाय एकता के सूत्र
मे आग उट रहे ह । पतमान समय मे आपके श्री मत्र ते जो विनाग
किया है । सराहनीय है ।

अपनी 2 मा पना करन हण भी यदि मगहन हो मजपूत कर,
मिन-मुन कर अहिंसा, अनवान श्री अपण्यह वा प्रचार हो तो
जैन उमं की जय-जयकार हा मवती ह ।

आचार्य विजय इन्द्रदिन्त सुदि

अनेकान्त दर्शन का साक्षात् प्रतिबिम्ब

बीबीकर परमात्मा महावीर प्रभ ने सत्त्वता, महजता व
कपाय-भक्ति को ही मोक्ष का साधन बताया है। बाह्य क्रियाएँ
प्राग्वन्दर की शक्ति का उपाय है। उनका यही उद्देश्य है— कपायों
या सर्वेश्व विनाश हो ! कपाय-भावों की उपस्थिति में किरा-
नगायन सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्रदान नहीं करता।

यह बात विनिश्चय लगता है— जब हम महावीर प्रभ के ज्ञान
में रहने वाले ही बाह्य क्रियाओं को लेकर कपाय-भावों का
उपासन करते हैं। अनेक पथों, मन्त्रों, संप्रदायों में बड़ा वीर-जागरण
अनेकान्त का उपदेश देना-2-वय उसके आचरण ने सर्वेश्व विभक्त
हो गया है। ऊपर ने एकता के जोर्गलि तारे लगाते बाला शमण-
वर्ग भी अन्दर में अच्छ-सत्ताग्रह की चर्चा फेलाकर अनहिण्णता
का निर्माण करता है। यह अन्यन्त दुःखद परिस्थिति है। ऐसी
विषमता में जवाहरनगर का जैन श्वे सथ एक मुगद मन्त्र बनकर
उभरा है, जहा किसी भी पंथ क्रिया सपदाय का दुराग्रह नहीं है।
जिनो जिन मान्यता आचरण में रक्ति हो वह उन प्रकार की
प्रागधना अनुष्ठान करने में स्वतन्त्र है, पर देशो मद पर भाव !
प्रभ महावीर के अनेकान्त दर्शन का यह साक्षात् प्रतिबिम्ब है।
सत्त्विक के बलवर से चर्चा साक्षात् ही प्रतिपाद के समय से उभ
सत्त्विक के साक्षात् दर्शन विवेक है।

जब सत्त्विक के इन अनुष्ठान का स्वीकार करते हैं, अनेकान्त
कपाय ही हम प्रागधता क्रियाय की शक्ति से सत्त्विको उभर कर
जोकर धर्म जन्म कर ले जाओ ! सत्त्विक उभर कर सत्त्विक
सत्त्विक है।

सत्त्विक के इन अनुष्ठान का स्वीकार करते हैं, अनेकान्त
कपाय ही हम प्रागधता क्रियाय की शक्ति से सत्त्विको उभर कर
जोकर धर्म जन्म कर ले जाओ ! सत्त्विक उभर कर सत्त्विक
सत्त्विक है।

जैन समाज के लिये आदर्श

श्री जैन श्वेताम्बर मध जवाहर नगर, जयपुर सम्पूर्ण जैन समाज को एक ही स्थान पर पूजा, अर्चना, माधना, सामायिक, स्नाध्याय उपासना, आधना की पृष्ठ भूमि नैयार कर जैन एवना वा जो मस्वार मूलक वातावरण निर्माण कर रहा है, वह वनमान युग की आवश्यकता तो है ही, आने वाली पीढी को अनिवार्यता भी है। हम जैन के नाम पर एकत्व की अनुभूति करें और एक साथ बैठकर सामायिक स्वाध्याय करें तो मन्मथ ही हमारे हृदय एक सूत्र में बंध सकेंगे।

श्री जैन श्वेताम्बर मध की एकत्व मूलक दृष्टि और राय विधि आज समस्त नगरो, महानगरो के जैन समाज के लिये आदर्श है। मप्रेरक है। मैं हृदय से कामना करता हू कि भगवान महावीर का समताप्रधान जैन मध, "ममत्व" को जीवन व्यापी बनायें और एकत्व को राष्ट्रीय शक्ति के रूप में प्रस्तुत करें। भविष्य की अनेक शुभ मभावनाओ की अपक्षा के साथ।

श्री चन्द बुरुआना 'सरस्व'

नेवक, मम्पादक, पत्तारार
आगरा



समप्रदाय को एक जुट करने में अग्रसर

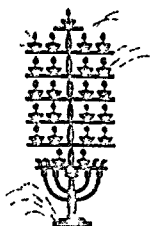
मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि श्री जैन श्वेताम्बर मध, जवाहर नगर, जयपुर अपनी स्मारिका वा नीमरा अब प्रकाशित कर रहा है। मुझे यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि जैन श्वेताम्बर मध के अन्तर्गत टस केन्द्र में जैन श्वेताम्बर मतावलम्बियों के विभिन्न सम्प्रदाय अपने-अपने तरीके में पूजा अर्चना, सामायिक, स्नाध्याय करते हैं। मैं आशा करता हू कि मध जैन सम्प्रदाय को एकजुट करने में अपने प्रयत्नों में अग्रसर होना रहेगा।

मैं मध के प्रयासों की सफलता की कामना करता हू।

चन्दनमल बौद्ध

मदम्य

राजस्थान विद्यालय मभा



शुद्धी

जैन धर्म विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से है। प्रकृति के नियमों के अनुसार इसके सिद्धान्त विकसित हुए हैं। जैन परम्परा में आत्मा के स्वभाव को ही धर्म कहा गया है। आत्मा का स्वभाव है—श्रमा, विनय, मारल्य, मन्तोष, सहिष्णुता, करुणा आदि। इन गद्वृत्तियों को विकसित करने के लिए ही धर्म की साधना है। जैन शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि सरलता और शुद्धता में ही धर्म टिकता है। पर विद्वन्मना यह है कि विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ-साथ जीवनयापन की मुख-मुचिधारे तो बड़ी हैं, कला-कांजल, वाणिज्य-व्यवसाय और रहन-सहन के नौर-नरीकों में युगान्तरकारी परिवर्तन आया है। वस्तु और पदार्थ की गुणवत्ता को निवारने में आज की तकनीक लगी हुई है। पर आत्मा का स्वभाव प्रदूषित न हो, विकार और विभावग्रस्त न हो, इस दिशा में कोई मार्गजनीन तकनीक विकसित नहीं हो पाई है। परिणामस्वरूप मनुष्य शारीरिक शक्ति से उन्मिद्वय-स्तर पर सुखानुभूति भले ही करता हो, पर आत्मिक शक्ति में मानसिक स्तर पर वह कुण्ठित, निराश, हताश और गनावयम्न है। धर्म की गुणवत्ता का निवारने में तो वह दिन-रात एक हिये जा रहा है, पर व्यक्तित्व की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उसके पास कोई शक्ति और योजनाबद्ध कार्यक्रम नहीं है।

धर्मशास्त्रों में मनुष्य जीवन को 'वृत्तंभ' कहा गया है। पर आज बढ़ती हुई जनसंख्या के विस्फोट ने मनुष्य जीवन की 'वृत्तंभता' पर प्रश्न-चिह्न लगा दिया है। अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री और अन्य जैविक वैज्ञानिक मनुष्य की जन्म-मरण की निर्गन्धित कर जनसंख्या को कम करने में अपने ज्ञान और योग्यता का उपयोग कर रहे हैं। पर यह निश्चय नहीं जा



आज यह दिव्यता सुप्त है। दैहिकता में ही मनुष्य उलभा हुआ है। उसे आडम्बर प्रिय है, आत्मोपमा नहीं। उसने पदार्थ-ज्ञान के क्षेत्र में विस्फोटक स्थिति पैदा कर दी है, पर आत्म-ज्ञान से वह शून्य होता जा रहा है। स्थिति इतनी भयावह और विकट बन गई है कि मनुष्य की स्वार्थलिप्सा ने उसे उपभोक्ता सस्कृति का दाम बनाकर उसकी सवेदनाओं को कुण्ठित कर दिया है। उसकी लोभ, सग्रह और भोगवृत्ति के अतिरेक ने पृथ्वी, जल, वायु सम्बन्धी बाह्य पर्यावरण को ही प्रदूषित नहीं किया है वरन् उसके अन्तर में निहित वैश्व, तितिक्षा, प्रेम, दया, करुणा जैसी आंतरिक सद्बृत्तियों को भी जड़ बना दिया है। वह सवेदनारहित और क्रूर बन गया है। उसका तथाकथित ज्ञान अहिंसा, समय और तप से न जुड़कर हिंसा, भय, आतंक, शोषण, उत्पीड़न का बाहक बन गया है। परिणामस्वरूप मनुष्य बाहरी चमक-दमक, आडम्बर-प्रदर्शन, नीति-नियमों आदि में तो महान् बनने का दिखावा करता है, पर आंतरिक रूप में वह अपने आपमें वीना और भावशून्य होकर रह गया है।

महानगरीय सभ्यता के विकास, औद्योगीकरण, बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव और आर्थिक तंगी के कारण आज सयुक्त परिवार छिन्न-भिन्न हो रहे हैं। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला कहे गये हैं। यहाँ बालकों को जीवन की गुणवत्ता पनपाने के संस्कार मिलते हैं। स्नेह, सद्भाव, सहयोग, सहनशीलता, आत्मानुशासन जैसे गुणों का विकास परिवारों से ही मिलता है। परिवारों के विघटित होने के कारण आज का व्यक्ति बचपन से ही उच्छृङ्खल, चिड़ाचिड़ा, स्वार्थी, सवेदन-शून्य और आश्रामक देखा जाता है। यही नहीं, वह एकाकी, उदासीन, विक्षिप्त और नानाविध दवाओं से ग्रस्त रहता है। इन परिस्थितियों में उसका लालन पालन होते रहने से उसमें मानवीय सद्बृत्तियों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता और वह भारी भीड़ में भी अपने को अकेला पाता है। उपभोग्य सामग्रियों से भरे-पूरे भण्डारों में भी वह अपने को अतृप्त और असन्तुष्ट महसूस करता है। इस विकृत विपन्न स्थिति से ऋण पाने के लिए कभी वह सस्ती मनोरंजकता प्रदान करने वाले बलबों की शरण लेता है तो कभी मादक द्रव्यों के सेवन का शिकार हो जाता है। इस मायावी सत्सार में भटकते-भटकते उसका दुर्लभ मानव जीवन निरर्थक और निस्सार बन जाता है। अपने आपसे उसे धृष्टा होने लगती है और उसका हीरे सा अनमोल जीवन दो कोडी का भी नहीं रहता।

यह स्थिति आज किसी एक देश तक सीमित न होकर सम्पूर्ण विश्व की बन गई है। इसका निस्तारण सही अर्थों में वास्तविक धर्म के

पालन में है। यहाँ धर्म का अर्थ किसी मत या सम्प्रदाय से न होकर उन आदर्शों और सद्कर्तव्यों में है जिनसे आत्म-कल्याण के साथ-साथ लोक-कल्याण होता है। जैन धर्म आदर्श नागरिक के कर्तव्यों की विवेकपूर्ण परिपालना पर बल देता है। उसका बल अहिंसा, सत्य, अस्तेय, इन्द्रिय-मयम और इच्छा-नियन्त्रण पर है। भगवान् महावीर ने लगभग साढ़े चारह वर्षों की कठोर तपस्या और मौन साधना के बाद जो उपदेश दिया, उसका सार यही है कि प्राणी मात्र को आत्मतुल्य समझो, किसी को भी मनस्य, वाचा, कर्मणा दुःख न दो, सन्ताप न दो, सबसे प्रेम करो। दुखियों की सेवा करो और दुराग्रही मत बनो। विविधता में एकता के दर्शन करो।

भगवान् महावीर को हुए आज ढाई हजार वर्षों से अधिक समय हो गया है, फिर भी जैन धर्म, जिसे उन्होंने 'श्रमण धर्म', 'निर्ग्रन्थ धर्म' और 'अर्हत् धर्म' कहा है, वह आज भी अनवरत रूप से चला आ रहा है। इस अनवरत का एक प्रमुख कारण है भगवान् महावीर द्वारा चतुर्विध संघ की स्थापना। उसके अंग हैं—साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। धर्म को संघबद्ध करने के कारण, भले ही जिनशासन में कई उतार-चढ़ाव आये, गण-गच्छ-भेद बने, पर वह विलुप्त नहीं हुआ। उसकी विकास-यात्रा बराबर चलती रही। धर्म की इस जीवन्तता का बहुत कुछ श्रेय संघ को है। 'मन्दीसूत्र' में संघ की स्तुति करते हुए उसे नगर, रथ, चक्र, कमल, सूर्य, चन्द्र, पर्वत और समुद्र से उपमित किया गया है। संघबद्ध होने से व्यक्ति को अपनी आस्था का केन्द्र मिल जाता है, वह अकेला नहीं रहता। उसकी समष्टिगत चित्तवृत्ति को फलने-फूलने का उचित अवसर मिल जाता है। आज के विघटित होते हुए परिवार और समाज में ऐसे धर्म संघों की महती आवश्यकता है।

श्री जैन ध्वजाम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर महानगर का एक विशिष्ट संघ है, जो धार्मिक एकता, सामाजिक मोहार्द्र और आत्मिक उत्थान के लिए समर्पित है। यहाँ 'महावीर-साधना केन्द्र' के रूप में जो धर्मसंघों का निर्माण हो जा रहा है उसमें साकार-निर्माकार-उपासना और ज्ञान-भक्ति की आराधना के लिए समान सुविधाएँ और अवसर प्राप्त हैं। एक-दूसरे के लिए मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है जो दूसरों और सामाजिक-समाजवाद, दया-शौच आदि के लिए स्वयंसेवा भी चल रहा है। साकार-भक्तों के सर्वांगीण विधान के लिए महावीर उत्थान भी निर्मात्रित किया जा रहा है। सामाजिक, सामाजिक, नैतिक आदि प्रवृत्तियों को सुधार करने में महावीर धर्म के लिए और समाज के विभिन्न वर्गों की आर्थिक भ्रम में मोड़ने के लिए संघ के 'समस्त 'सूत्र प्रकोष्ठ' और 'संविदा प्रकोष्ठ' भी समर्पित हैं। सामाजिक सुधार और सामाजिक

सहिष्णुता को सध अपने कार्यक्रमों के माध्यम से मूर्त रूप देता रहा है। विभिन्न धर्मों के आचार्यों, मुनियों, साध्वियों, श्रावकों, श्राविकाओं के लिए सध का द्वार सदा खुला हुआ है। यहाँ की साधना-स्थली पर सत्रका स्वागत है।

'कैवल्य' स्मारिका का यह तृतीय अंक पाठकों के हाथों में भोपते हुए हमें परम प्रमत्ता है। इसमें जैन धर्म दर्शन संस्कृति, इतिहास एवं कला से सम्बन्धित रचनाएँ प्रकाशित की गई हैं, साथ ही श्री जैन श्र्वे० सध, जवाहर नगर के सदस्यों की पारिवारिक परिचय-भाकी भी विस्तार से दी गई है, जिसका सामाजिक-सौहार्द-भाव विकसित करने में अपना विशेष महत्त्व है। पृष्ठों की सीमा का कारण कई रचनाएँ प्रकाशित होने से रह गई हैं। इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। स्मारिका को उपयोगी एवं समृद्ध बनाने में प्रमुख जैन आचार्यों, मुनियों, साध्वियों, विद्वान् लेखकों और विज्ञापनदाताओं से उदारतापूर्वक जो सहयोग मिला है, उन सबके प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

सध के पदाधिकारियों, सम्पादक मण्डल तथा विज्ञापन मण्डल के सभी सदस्यों का मैं अनुग्रहीत हूँ कि उन्होंने मुझे स्मारिका के साथ जुटने का न केवल अवसर दिया, वरन् हर सम्भव सहयोग भी प्रदान किया। उनके सहयोग एवं मागदर्शन के कारण ही स्मारिका मूर्त रूप ले सकी है।

स्मारिका के सम्बन्ध में आप सत्रकी मम्मति व मुभाज ग्राम-न्यत है।

—डॉ० नरेन्द्र भानावत
सम्पादक



पल्लिष्ठालय्य पूज्य श्री अणिलक्ष्म आवासीजी स्व. सा. की कलम से

गर्भी-यभी मुझे अवाहन नगर में सूचना मिली कि वे एक समारोह या प्रकाशन कर रहे हैं और मुझे लेख भेजना है वैसे मैं लेख के लिए कम ही समय विचार पा रहा हूँ क्योंकि विचार की स्थिति जीवंत समय से चल रही है परन्तु अवाहन नगर के समाज के आग्रह भरे अनुरोध को टालने का साहस भी नहीं कर पा रहा हूँ और ऐसे-ऐसे स्वतः ही भावनाएँ शब्दों की बाटों में बंधने लगती हैं।

जयपुर में मेरा आनुमति चल रहा था और उस अवधि में मुझे जयपुर के उप-नगर अवाहन नगर के श्रावकों से परिचित होने का अवसर भी मिला। मैं उनके अपने समन्वय सुवचिसम्पन्न विचारों की गम्भीरता और कार्य-क्षमता से प्रभावित हुआ और संयोग ऐसा बना कि उन सभी गुणों को मैंने उनमें साकार होने हुए भी देखा।

अवाहन नगर की प्रगल्भ और अनुकरणीय है समन्वय-धारा जिसके समर्थन सम्पूर्ण समाज एक धाम में विनोया हुआ है। वहाँ न मन्दबोध की विद्विषि पक्षी और न भ्रान्ता वा पद पाण्डि ही जायना ! सभी अपनी-अपनी धारा के अनुगत सामिक और आध्यात्मिक शैली अपनाते हुए एक दूसरे से सम्पर्क पूर्ण प्रेम बना व्यवहार करते हैं और वहीं उनकी अपूर्व सम्पत्ति है। यहाँ एक हीन आश्रमों और मन्दिर का निर्माण कराया है (विराट मन्दिर निर्माणार्थ) निर्माण में शक्ति आश्रमों के विद्यालय प्रांगण में प्रतिष्ठित है। वहीं सभी गण्ड नगर का विद्यालय प्रांगण भी निर्माणार्थ है।

जो मने प्रवेश में देना उनकी तो मुझे तल्पना भी नहीं थी। गंगा लग रहा था कि जवाहर नगर का प्रत्येक कण उस आयोजन पर उल्लसित ही नहीं है कार्य के प्रति निष्ठा और जगन ने भरा भी।

चारों ओर सभी कोई कार्य में व्यस्त ही दिख रहे थे। जगता था वह प्रतिष्ठा टाटावादी में दादागुरु की नहीं उनकी अपनी कार्य क्षमता और गुम्देव के प्रति जट्ट आस्था की रोम-रोम में अभिव्यक्ति है।

उनकी लगन, उनसे व्यस्तित्व आयोजन में मैं भी अभिभूत था और उस प्रवेश समारोह से ही मैंने जिसे एक मामूली भा आयोजन ही समझा था विजिष्ट समझने हुए अपूर्व ही तल्पना करनी।

वही कोई विमर्श या मतभेद की हल्की सी चर्चा भी नजर नहीं आ रही थी। मुझे भी उनके साथ कार्य करते हुए अनिर्वचनीय आनन्द आ रहा था क्योंकि मैंने युवा कार्यकर्ता गच्छिवाद या परम्परावाद के न तो पोषण थे न मित्राण। उचित प्रस्ताव चाहे वह परम्परा के खिलाफ होता परन्तु प्रम और जनोपयोगी होता तो स्वीकार करते और युवा हृदय होने हुए भी उचित परम्परा के प्रति पूण निष्ठा सम्पन्न भी।

आज अनेकों स्थान पर परिभ्रमण करते हुए पाते हैं कि प्रम या मर्म और उसकी आचारनिष्ठा दिन-प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है पर जब रात पद या मत्ता की आती है तो अपने आप ही कला के प्रथम स्थान पर चढ़े कर लेते हैं दूमरी और गच्छ निष्ठा तो नून हो जाती है पर गच्छवाद प्र जाता है। मे गच्छ निष्ठा पुरी नहीं मानना क्योंकि वह जीवन का एक मरणात्मा पहलू है पर म गच्छवाद का समस्त युवावस्था की जग मानता है। आज हम गच्छनिष्ठा और गच्छवाद की बदलता का भूलकर उन दोनों को एक समझ लेते हैं मे उस भेद का स्पष्ट करना चाहता हूँ कि पक्षपती विपक्ष को उगाट मके जाँ समाज का नयी दिशा प्रदान करके उसे मजबूत, सतिय और धर्ममय बना मने।

गच्छनिष्ठा में तात्पर्य है अनेकों विचारधारा और आचार-परम्परा की विधि का सम्मान करते हुए अपनी पूण परम्परा में चली आ रही आचार-पद्धति के प्रति सम्पण जग गच्छवाद का अर्थ है मात्र अपनी मान्यता का पोषण करते हुए अन्य की आचारपद्धति की आलोचना। प्रथम मायता स्याद्वाद का पोषण करनी है दूमरी मायता एवान्तवाद का। महावीर का उक्त स्याद्वाद के पोषण के रूप में और एवान्तवाद की मायता के विरोध में हुआ था और आज समाज में वैचारिक चिन्तन का कैसा अयोग्य आ गया जिसके चलते महावीर के मित्रान ही गच्छ गच्छ हो गए।

एक हजार की पड़िया समाप्त हुईं प्रतिष्ठा का दिन भी आ पहुँचा । दादा गुरुदेव की नव्य और विराट् प्रतिमा जैसे साक्षात् आशीर्वाद की मुद्रा में अभिवृष्टि कर रही थी । उस प्रतिमा को हम कलात्मकता से निगारा गया था कि वह गुरुदेव की उम्र और उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रतिनिधित्व करती थी । प्रतिमा का आरूपण अनूठा था उसकी भव्यता और कलात्मकता हजारों-हजारों हृदयों को श्रद्धामय बना रही थी ।

निर्धारित समय में सम्पूर्ण विधिविधान और पवित्र अनुष्ठानों सहित उस प्रतिमा को स्थापित किया गया और उस क्षण ऐसी तीव्र अनुभूति हुई कि आज यह प्रतिमा हम स्थान पर नहीं हजारों लाखों हृदय मिहासनों पर अधिष्ठित हुई है साथ ही प्रस्तुत प्रतिष्ठा समारोह में एक विजिष्ट और गहरी अनुभूति के साथ सर्वदा के लिए स्मृति का अनमोल उपहार बन गया ।

आज भी जवाहर नगर की माप्रदायिन एकता और गुणात्मक आत्मीयता हजारों किलोमीटर की दूरी में भी मुझे भावाभिभूत करती है ।

गुरुदेव उनके मध सम्राज को निरन्तर आध्यात्मिक सम्बन्ध प्रदान करते हुए उनकी भावनात्मक एकता को निरन्तर बढ़ाते रहे ।

एही शुभाशास्त्रों के साथ ।





प्रस्तावित निर्माणाधीन योजना

- ① भगवान महावीर का शिखरबद्ध मन्दिर
 - ① स्थानक
 - ① पुस्तकालय
 - ① औषधालय
 - ① भोजनशाला
 - ① आयुर्विज्ञानशाला
 - ① ऊपरी भाग में यात्रियों के ठहरने के लिए कमरे
 - ① महावीर उद्यान का विकास
 - ① सामुदायिक भवन का निर्माण
 - ① निपट नटघाना

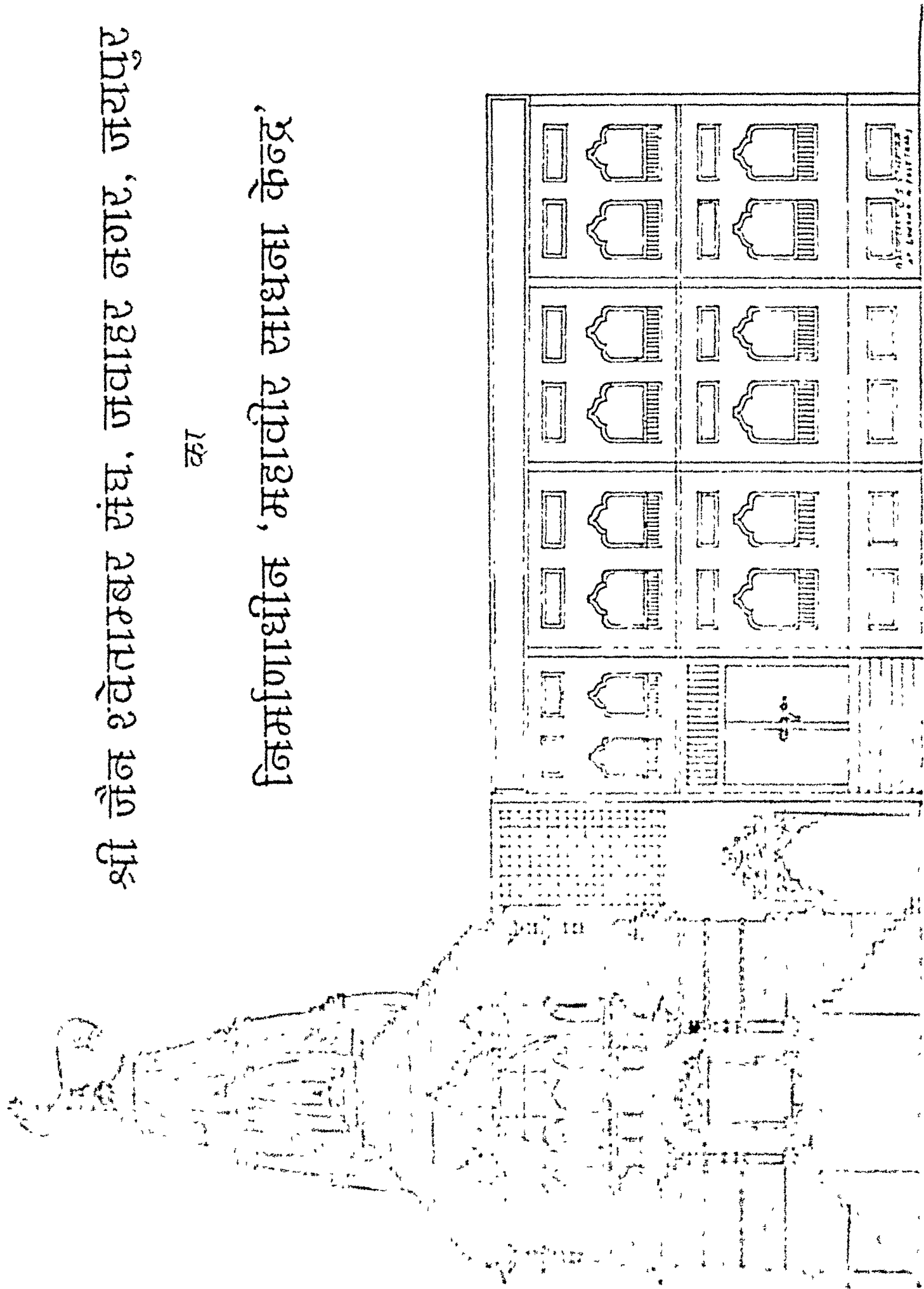
विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
जैन धर्म में कल्याण का सूक्ष्म भाव	—श्री मधु श्री कावरा	58
अनेकांत दर्शन	—डॉ० नरेन्द्र मानावत	62
ले जिनवर का नाम	—गणिवय मणिप्रम सागर	65
मणिधारी-श्री जिनचन्द्र मूरीजी	—श्री नथमल लाडा 'सेवक'	66
विचक्षण उवाच	—प्रवर्तिनी विचक्षण श्री जी	71
श्रद्धा-सुमन	—डु० कविना जूनीवाल	72
कर्म-धर्म पर विजय कैसे ?	—श्री सरदारमल छाजेठ	73
मुझे मुक्ति दो !	—श्री पदमचन्द सिंधी	75
मुक्तक	—श्री शशिकर 'खटका' राजस्थानी	76
विदेशों में जैन सिद्धान्त का प्रचार-प्रसार	—डॉ० धनराज चौधरी	77
नर ! तेरा चोला रतन अमोला	—साध्वी मणिप्रसा श्री जी	80
शाकाहार आन्ति मे महिलाओं की भूमिका	—डॉ० श्रीमती शाता मानावत	81
ध्यापु समान जगत जस चीहा	—साध्वी मणिप्रसा श्री जी	84
जैन इतिहास के पत्रों में	—श्री सुशीलचन्द्र सिंधी	85
महावीर का अहिंसा दर्शन एवं पर्यावरण संरक्षण	—श्री चिन्मय भट्ट	87
जैन धर्म सिद्धान्त और व्यवहार	—श्री सुधीन्द्र गेमावत	90
कथनी-करनी एक !	—गणिवय मणिप्रम सागर	91
व्यवहार और परमाय	—डॉ० महावीर राज गेलडा	92
गडबड रेडियो	—श्री हेमन्त मेहता	94
बही ज्ञान भण्डार !	—गणिवय मणिप्रम सागर	95
The Jain Declaration on Nature	—Dr L M Singhal	96
Jain Community Some Salient Features	—Dr Vilas Sangave	103
Income & Expenditure Account 1989		106
' ' ' " 1990		110
' " " " 1991		114
" " " " 1992		118
खण्ड द्वितीय		
स्मृतिया जो शेष रह गईं		
खण्ड तृतीय		
पारिवारिक परिचय-विवरण		

(1) से (62)

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

का

निर्माणाधीन 'महावीर साधना केंद्र'



श्रद्धांजलि



प्रिय स्व पंकज सिधवी IAS (घयनित)

आप सभी की स्मृति एवं सहानुभूति के लिए
हम हृदय से आभारी हैं।

धनपतराज मेहता

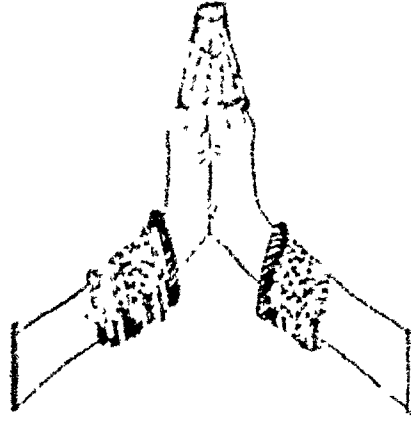
सवाईसिंह सिधवी

- उत्तम आनन्द डेरी एन्टरप्राइजेज
- आनन्द एजेन्सी
- उत्तम आनन्द एक्सपोर्ट्स
- आनन्द मोटर्स

D-35 पत्रकार कॉलोनी राजापार्क, जयपुर-302 004

ग्राम "अमिलापा" जयपुर

फोन 40726, 43163, 515489



वन्दना

अरिहन्तों को नमस्कार
 श्री सिद्धों को नमस्कार
 आचार्यों को नमस्कार
 उपाध्यायों को नमस्कार
 जग में जितने साधुगण हैं
 मैं सबको वन्दूँ बार-बार । अरिहन्तों को.....

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन ओऽऽऽऽ
 मुमति पद्म सुपाश्वर्ष जिनराय ।
 चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस नमि
 वासुपूज्य पूजित मुरराय ॥

विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वलऽऽऽऽ
 गान्ति कुन्धु अर मलिन मनाय ।
 मुनिमुदित नमि नेमि पार्श्वप्रभु
 वर्धमान पद पुण्य नद्याय ॥
 चौबीसों के चरण कमल में

मेरा वन्दन बार-बार । अरिहन्तों को.....

द्विभवे रागद्वेष-तामादि ओऽऽ, ज्ञाने सब ज्ञान ज्ञान विद्या ।
 सब ज्ञानों को मोक्षमार्ग का, निम्नगुह हो उपदेश दिना ॥
 बुद्ध और जिन हृदि हर शक्तऽऽ का पैगम्बर हो छयनाय ।
 सबके चरण कमल में मेरा, वन्दन होवे बार-बार ॥
 अरिहन्तों को.....

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर



प्रतिवेदन

(वर्ष 1989-92)

जवाहर नगर, जयपुर गुलाबी नगरी जयपुर का एक उप नगर है जिसमें लगभग तीन सौ जैन श्वेताम्बर परिवार हैं। सभी परिवार सम्प्रदाय की सकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर महावीर साधना केन्द्र पर आयोजित धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहते हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर संघ सोसायटीज एक्ट के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था है जिसकी स्थापना 5 अप्रैल, 1981 को की गयी है। गत 11 वर्षों से यह संघ धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविध क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। संघ की प्रवृत्तियों के संचालन हेतु जवाहर नगर के सेक्टर 4 में आवासन मण्डल से 1530 वर्ग मीटर भूखण्ड 3 85 लाख रुपये के मूल्य पर लिया गया था। यह राशि जवाहर नगर में निवास कर रहे परिवारों ने ही एकत्रित करके दी थी।

इस विस्तृत भूखण्ड पर प्रथम चरण में दादावाटी तथा प्रवचन हॉल तैयार कराया

गया जिसमें संघ की विविध प्रवृत्तियों का संचालन किया जा रहा है। द्वितीय चरण में स्थानक के कमरों का निर्माण कराया गया है। यहाँ 3 शिखर का भगवान महावीर का मन्दिर भी निर्मित किया जा रहा है जिसकी ऊँचाई करीब 16 फीट हो गयी है। इसी चरण में 4600 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में महावीर उद्यान भी विकसित किया जा रहा है।

आगामी चरण में ऊपरी तल पर स्थानक का हाल, मन्दिर का निर्माण, भोजनशाला, आयुष्मिलशाला तथा ठहरने के लिए कमरों का निर्माण, औपचारिक एवं पुस्तकालय आदि निर्माण प्रस्तावित हैं जो संघ के वित्तीय संसाधनों पर निर्भर करेगा। जैसे-जैसे उक्त कार्यों के लिए धन राशि एकत्र होती रहेगी, उसी के अनुसार निर्माण कार्य करा दिया जायेगा।

संघ के विधान के अनुसार 23 जुलाई, 1989 की माधारण सभा में वर्तमान कार्यकारिणी का चुनाव किया गया। कार्यकारिणी के सदस्य इस प्रकार हैं—

वर्तमान कार्यकारिणी :—

1. श्री उमरावचन्द्र सचेती, अध्यक्ष
2. श्री सुधीन्द्र गेनावत, उपाध्यक्ष
3. श्री सुरेन्द्र पोखरना, मद्रासंघी
4. श्री उत्तमचन्द्र जैन, संयुक्त मंत्री
5. श्री दौलतचन्द्र चपलावत, उपाध्यक्ष
6. श्री राजेन्द्रकुमार पंसारी,
सांस्कृतिक मंत्री
7. डॉ. संजीव भानावत, शिक्षा एवं
साहित्य मंत्री
8. श्री फतेहसिंह बरदिया, निर्माण मंत्री
9. श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, निदे., युवा प्रकोष्ठ
10. श्री प्रेमचन्द्र जैन, पूर्व अध्यक्ष (पदेन)
11. श्री जितेन्द्र मूथा, अध्यक्ष, युवा प्रकोष्ठ
12. श्रीमती पद्मा चपलावत, अध्यक्ष
महिला प्रकोष्ठ
13. श्री शेरसिंह जैन, सदस्य
14. श्री सुशीलचन्द्र सिधौ, सदस्य
15. डॉ. पदमचन्द्र मुणोन, सदस्य
16. डॉ. दूंगरसिंह जैन, सदस्य
17. श्री बनपतराज मेहता, सदस्य
18. श्री हेमचन्द्र रांग्रा, सदस्य
19. श्री राजेन्द्रकुमार पदया, सदस्य
20. श्री धामराज मेहता, सदस्य
21. श्री के. के. मेहता, सदस्य
22. श्री राजेन्द्रकुमार मेहता, सदस्य
23. श्री बलराम मेहता, सदस्य
24. श्री सुधीलकुमार मूथा, सदस्य
25. श्री जगदामर सोरा, निर्देशक समिति
26. श्री सुम. कि. सोरा, निर्देशक समिति

युवा प्रकोष्ठ तथा महिला प्रकोष्ठ एक संघ के घटक हैं तथा वर्तमान में युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र मूथा तथा मंत्री श्री विनोद सचेती हैं। युवा प्रकोष्ठ के परामर्शदाता कार्यकारिणी समिति के सदस्य श्री सुरेन्द्रकुमार जैन (श्रीसवाल सोप) हैं। महिला प्रकोष्ठ की वर्तमान अध्यक्ष श्रीमती पद्मा चपलावत तथा मंत्री निर्मला लोढा हैं।

युवा प्रकोष्ठ के 89-90 में अध्यक्ष श्री प्रवीण लोढा तथा मंत्री श्री जितेन्द्र मूथा व सत्र 90-91 में अध्यक्ष श्री सुनील मुणोन तथा मंत्री श्री संजय पंसारी रहे। इसी प्रकार सत्र 89-90 में महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष श्रीमती गार्श्वकुमारी कोठारी व मंत्री श्रीमती अनु भण्डारी व 90-91 में अध्यक्ष श्रीमती सुशीला जैन तथा मंत्री श्रीमती निर्मला सचेती रही।

1989-90, 1990-91 व 1991-92 में सम्पन्न हुए कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

भूमि पूजन अर्थात् गगन मुहूर्त 23-7-88 तथा जिनान्गम 25-8-89 के अनुष्ठान 8 फरवरी, 90 बुधवार माघ सुदी चौबिस को प्रजा पुष्प, आचार्य भगवन्त पूजा श्री जिन कानिगागर श्रीश्वरजी महाराज के प्रधान जितय गणेश्वर्य मणिप्रभ रामस्त्री की निधु में अठारह महीनस के रूप में 61' की अक्ष मूर्ती प्रविष्टा वागदाणी में वास सुदेश मणिधारी श्री जिन बन्धुसुनित्री भद्रागण की प्रतिष्ठापित करवाई तथा साथ ही 21' बड़ी हुई श्री जिनसुनित्री व श्री जिन बन्धुसुनित्री भद्रागण की व श्री जिनसुनित्री भद्रागण की प्रतिष्ठापित करवाई तथा साथ ही 21' की अक्षमूर्ती वागदाणी में वास सुदेश मणिधारी

मे लाई गई प्रतिमा की प्रतिष्ठा करवाई गई। इस दिन जल यात्रा निकाली गई तथा स्वामी वात्सल्य किया गया।

दादा गुरुदेव की जन्म जयन्ती 27 अगस्त, 91 की पूर्व संध्या पर भक्ति मंगीत का आयोजन किया गया। महावीर स्वामीजी के मन्दिर के मूल गम्भारे की नींव का प्रथम भट्ट 6-12-90 को श्रीमान् जीवनमलजी सा वोहरा द्वारा रखा गया।

29 व 30 जनवरी, 91 को दादावाडी का प्रथम वार्षिकोत्सव आयोजित किया गया जिसे श्री मगनजी कोचर, बीकानेर तथा जैन नवयुवक मण्डल, जयपुर ने अपनी स्वर लहरियो से गुजायमान किया।

द्वितीय वार्षिक महोत्सव 18 फरवरी, 1992 को आयोजित किया गया जिसमे श्री मगन कोचर, बीकानेर तथा जैन नव-युवक मण्डल, जयपुर ने अपने मधुर भक्ति रस से परिपूर्ण भजनों से जन-समूह को भक्ति रस में डुबो दिया।

महावीर साधना केन्द्र पर ही दस दिवसीय प्रेक्षाघ्यान तथा योग साधना शिविर का आयोजन आचार्य तुलसी के अनुयायियों ने आयोजित किया।

होली एवं दीपावली मिलन समारोह

सदा की भाति तीनों वष ही होली एवं दीपावली पर स्नेह मिलन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में आकाशवाणी के कलाकारों ने भी रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 1992 में होली स्नेह मिलन कार्यक्रम में प्रख्यात कवि श्री मेघराज मुकुल मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे।

महावीर जयन्ती समारोह

श्री जैन श्वेताम्बर सघ की ओर से प्रति वर्ष महावीर जयन्ती समारोह अत्यन्त उत्साह व भक्ति-भाव से मनाया जाता है। सन् 1990 में महावीर जयन्ती पर श्री शीतल मुनिजी म सा का प्रवचन, 1991 में न्यायमूर्ति गणपतचन्द्र सिधवी के मुख्य अतिथ्य एवं डॉ रामचन्द्र द्विवेदी की अध्यक्षता में भक्ति संध्या तथा 1992 में श्री सज्जन श्रीजी म सा की स्मृति में जैन भजन प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता का आयोजन श्री पुखराज-रत्ना लूनिया के सौजन्य से किया गया। जिसमें सामूहिक भजन में श्री विजय मूसल व श्री अनिल श्रीमाल एवं पार्टी ने शील्ड जीती। 1151 रु, का प्रथम पुरस्कार कु सुनीता श्रीमाली, 551 रु का द्वितीय पुरस्कार कु नीना मेहता, 251 रु का तृतीय पुरस्कार किशोर सेठिया तथा 151 रु का विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार गौरव जैन को दिया गया। इस भक्ति संध्या में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री तेजराज भण्डारी मुख्य अतिथि थे तथा श्रुति मण्डल के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द्र सुराणा ने समारोह की अध्यक्षता की।

श्री विनयचन्द्र दीलतचन्द्र चपलावत (जैन पुस्तक मन्दिर, जयपुर) के सौजन्य से आयोजित अखिल राजस्थान अन्तर्महा-विद्यालय निबन्ध प्रतियोगिता का 501 रु का प्रथम पुरस्कार राजकीय महाविद्यालय, वासवाडा के श्री चिन्मय भट्ट को, 251 रु का द्वितीय पुरस्कार बी एन कॉलेज, उदयपुर के श्री मुकेश नाहर को तथा 101 रु का तृतीय पुरस्कार भीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर की कु सीमा पहूजा को दिया गया।

क्षमायाचना समारोह

क्षमायाचना समारोह हर वर्ष आयोजित

किए लेकिन गत वर्ष (1991) पर्यूपण पर्व पर सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिव्रमण, प्रवचन तथा सामूहिक पारणा का आयोजन किया गया। पूजायें सम्पन्न कराई गईं तथा रात्रि में भगवान एवं गुरुदेव की अंगरचनाएँ की गईं।

विशेष प्रवचन

इन वर्षों में अनेक प्रमुख एवं शीर्षस्थ आचार्यों एवं साधु-साध्वी मण्डल के विशेष प्रवचन आयोजित किए गये :—

1. युग प्रधान अनुष्ठाता एवं अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी।
2. आचार्य मन्नाट श्रीमद् विजय इन्द्रदित्त सूरिष्वरजी म. सा.।
3. श्री जयानन्दजी म. सा. (सामूहिक भक्ताम्बर पाठ)।
4. आचार्य नानेज के प्रथम शिष्य श्री विजय मुनिजी।
5. राष्ट्र सन्त स्व. अमर मुनिजी म. सा. (वीरायतन) के शिष्य ईश्वर मुनि एवं रंग मुनिजी।
6. गणित्यं महिप्रभ नागरजी म. सा.।
7. गणित्यं श्री महिमाप्रभ नागरजी, महोपाध्याय नन्दितप्रभ नागरजी एवं महोपाध्याय चन्द्रप्रभ नागरजी म. सा.।
8. सज्जन श्रीजी म. सा. की प्रमुख शिष्या वनीप्रभा श्रीजी।
9. श्री गोपाल मुनिजी म. सा.।
10. आचार्य गुरुमी के शिष्य सनेद मुनि।

11. आचार्य आनन्द ऋषि के शिष्य रमेश मुनि।
12. विचक्षण श्री सज्जन श्रीजी म. सा. की शिष्या विनीता श्री चन्द्रकला श्रीजी, सुदर्शना श्रीजी एवं प्रियदर्शना श्रीजी।
13. साध्वी श्री पद्मलता श्रीजी, यशकीर्ति श्रीजी म. सा.।
14. आचार्य श्री चन्दना श्रीजी, विरायतन।
15. आचार्य तुलसी के सन्त सुमेर मुनिजी
16. आचार्य आनन्द ऋषीजी म. सा. की साध्वी रमेश कँवरजी एवं कन्चन कँवरजी।

विशेष आगन्तुक

1. कल्याणजी आनन्दजी पेड़ी के अध्यक्ष श्री श्रेणिक भाई।
2. नाकोड़ा तीर्थ के अध्यक्ष श्री पारम-मलजी भंमानी।

साधारण सभा, स्वामी वात्सल्य, सामूहिक गोठ

वर्ष 1989 में पदमपुराजी, वर्ष 1990 में (श्री नागोरीयान) पार्ष्वनाथ मन्दिर एवं 1991 में बरसेड़ा जैन तीर्थ पर उक्त कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें मुदा प्रकोष्ठ के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ पुरस्कार भी वितरित किये गये।

पक्ष यात्रायें : -

1. लक्ष्मण-विहारी, महिमाश्री म. सा.

श्री जिन चन्द्रसूरिजी के 849 वें जन्म-दिवस समारोह पर महंगेली यात्रा ।

2 जोधपुर आचार्य श्री हस्तीमलजी म के दर्शनार्थ यात्रा ।

3 मालपुरा मे उपधान पर यात्रा की गई ।

सक्रान्ति समारोह एव स्वामी वात्सल्य —

आचार्य सम्राट विजय इन्द्रदिप्त सूरि-श्वरजी म सा के सान्निध्य मे सक्रान्ति समारोह आयोजित क्रिया गया तथा लगभग 2500 व्यक्तियों ने इसका लाभ लिया । बाहर से पधारने वाली की व्यवस्था भी की गई ।

गुणानुवाद सभा —

3 जून, 1992 को राष्ट्र सन्त उपाध्याय अमरमुनि के परलोक सिधार जाने पर उन्हें सार्वजनिक गुणानुवाद सभा मे श्रद्धाजलि अर्पित की गई । सान्निध्य मिला—साध्वी रमेशकॉवरजी का ।

द्विविध कार्यक्रम —

- 1 शरद पूर्णिमा पर भक्ति सध्या का आयोजन ।
- 2 नये वर्ष पर सांस्कृतिक कार्यक्रम ।
- 3 हर पूर्णिमा को रात्रि जागरण ।
- 4 प्रत्येक चतुर्दशी को प्रतिभ्रमण ।

कैवल्य म्मारिका का यह तीसरा त्रि-वार्षिक अत्र प्रकाशित क्रिया जा रहा है

जिममे जवाहर नगर मे निवास कर रहे श्री जैन श्वेताम्बर सघ के सदस्यों का पारि-वारिक विवरण, आचार्यों एव विद्वानों के लेख, वर्ष 1989-90 व 1990 91 तक के सघ के अकेक्षित लेखे तथा वर्तमान कार्य-कारिणी द्वारा आयोजित कार्यक्रम प्रकाशित किये जा रहे हैं ।

हम इस प्रतिवेदन के माध्यम से उन सभी सस्थाओं, दानदाताओं, विज्ञापन-दाताओं के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करते हैं जिन्होंने हमे समय-समय पर आर्थिक सहयोग दिया है । सभी आचार्यों तथा साधु-साध्वी मण्डल के प्रति आदर भावना प्रकट करते हैं जिन्होंने इस स्थान पर पधार कर ज्ञान बोध करवाया है, सस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा सभी समाज के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हैं जिन्होंने हमारे निमन्त्रण पर समय-समय पर पधार कर कार्यक्रमों को सफल बनाया है ।

उपरोक्त सभी गतिविधियाँ आप सभी के सहयोग, उपस्थिति तथा सम्वल से ही सम्भव हो पाईं ह और आप सभी इस आध्यात्मिक यज्ञ के भागीदार हैं । अगर फिर भी कुछ कमिया रह गई हैं तो इसकी जिम्मेदारी हम अपनी मानते हुए पुन आप सभी के प्रति कृतज्ञता जापित करते हुए समाज की नि स्वार्थ भाव से सेवा करते रहे, इसी आशा के साथ—

उमरावचन्द सचेतो
अध्यक्ष

सुरेन्द्र पोखरना
महामन्त्री



श्रीसंघों एवं चेरीटेबल ट्रस्टों द्वारा संस्था को दिया गया आर्थिक सहयोग

राशि	नाम
3,00,001	श्री जैन श्वेताम्बर नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट, नाकोड़ा
1,00,001	.. मोकलसर श्रीसंघ, मोकलसर
51,001	.. मंदिर श्री आदिनाथ श्वेताम्बर संघ, हाडेचा
31,001	.. जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, पेढी, सांचोर
21,001	.. शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर, राजेन्द्र जैन ट्रस्ट, वम्बई
21,001	.. रुकमणी शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, पाली
21,001	.. जैन श्वेताम्बर श्री मन्दिर, रानीवाड़ा
15,001	.. जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, सिवाना
15,001	.. जवेरी फेमिली चेरीटेबिल ट्रस्ट, देहली
11,001	.. जोगीचन्द्र जानचन्द्र महता चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
11,001	.. रतन चम्पा चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
11,001	.. जोघाराम मिलापचन्द्र वैद चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
11,001	.. तपागच्छ श्वेताम्बर मन्दिर, चाँमुखी
11,001	.. जैन मन्दिर ट्रस्ट, मालीवाड़ा
11,001	.. चन्दाप्रभु महाराज जैन जूना मन्दिर, मद्रास
11,001	सेठ मोती शाह रिलीजियस एन्ड चेरीटेबिल ट्रस्ट, वम्बई
5,001	श्री अजितनाथ मन्दिर, सिरोही
5,001	सेठ कल्याणमलजी परमानन्दजी मन्दिर ट्रस्ट, निरोही
5,001	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, पाली
5,101	.. उम्भेदपुरा श्रीसंघ, सिवाना
5,001	.. मोहनलाल गौतम महावीर चौधरी चेरीटेबिल ट्रस्ट, अहमदाबाद
5,001	.. मुनिमुद्रत स्वामी जैन श्वेताम्बर मन्दिर ट्रस्ट, कोन्हापुर
5,001	.. गोडी पार्श्वनाथ ट्रस्ट, निरोही
5,001	.. पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर, रोहीवा
5,001	.. जैन श्वेताम्बर आदिनाथ मन्दिर, मद्रास
5,001	.. जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, बेगलो
5,101	.. रामन कोठारी मैमोरियल ट्रस्ट, जयपुर
5,101	.. नवलका फेमिली मैमोरियल ट्रस्ट, जयपुर
5,101	.. रामरामजी भाषा चेरीटेबिल ट्रस्ट, जयपुर
5,101	.. सुरभद्रा श्री मंदिरकर्मण्य श्री ट्रस्ट, सिरोही
5,101	.. सुरभद्रा मोहनलाल भाषा ट्रस्ट, जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

दादावाडी के निर्माण में सहयोग देने वाले भाग्यशालियों की नामावली

- दादावाडी का सम्पूर्ण हाल का निर्माण—
स्वर्गीय श्री मागीलालजी पसागी एव स्व श्रीमती पुसराज देवी की स्मृति में श्री पारमचन्दजी सुरेशचन्दजी जैन (पमारी) बम्बई वालों द्वारा
- मणीधारी श्री जिनचन्द्र सूरेश्वरजी की छत्री का निर्माण—
स्व श्रीमती कश्मीरीवाई की स्मृति में श्री अमरचन्दजी, मेहरचन्दजी, ज्ञानचन्दजी वाघिया जयपुर वालों द्वारा
- दादावाडी के सम्पूर्ण फर्श का निर्माण—
स्व सेठ श्री महतावचन्दजी गोलेछा की स्मृति में श्री राजेन्द्रकुमारजी, सुरेन्द्रकुमारजी गोलेछा जयपुर वालों द्वारा
- श्री जिनदत्त सूरजी की छत्री का निर्माण—
श्री ज्ञानचन्दजी सुनीलकुमारजी शैलेन्द्रकुमारजी सचेती, जयपुर वालों द्वारा
- श्री जिनकुशल सूरजी की छत्री का निर्माण—
स्व श्रीमती जतनवाई धर्मपत्नी श्री रतनचन्दजी के पुत्र श्री सुशीलचन्दजी अनिल कुमारजी काण्टिया जयपुर वालों द्वारा
- श्री नाकोडा भंरवजी की छत्री का निर्माण—
श्री पारसमलजी भन्साली के पुत्र श्री प्रकाशराजजी भन्साली जोबपुर वालों द्वारा
- दादावाडी के प्रवेश द्वार का निर्माण—
स्व श्री घूकलमलजी सा भण्डारी एव धर्मपत्नी श्रीमती पदमादेवी भण्डारी (अजमेर वालों) की स्मृति में

स्थानक के कमरे एव दीर्घाश्रों आदि के निर्माण में सहयोग प्रदान करने वाले महानुभाव

श्रीमती मुन्नीदेवी चपलावत	—जयपुर
श्री माणकराजजी मदनराजजी वोहरा	—बम्बई
श्रीमती अचरजवाई सचेती (अलवरवाले)	—जयपुर
श्री नथमलजी लोढा	—जयपुर
” जौहरीमलजी पटवा	—जयपुर
” विनयचन्दजी चौरडिया	—जयपुर
” जगदीशचन्दजी भन्साली	—जयपुर
” विनयचन्दजी दौलतचन्दजी चपलावत	—जयपुर

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

परम पू. आचार्य श्री जिनवान्ति सूरीश्वरजी म. सा. के प्रधान शिष्य प. पूज्य गुरुदेव
श्री मणिप्रभ सागरजी म. सा. के कर कमलों द्वारा

माघ सुदी 14, संवत् 2046, तदनुसार 8 फरवरी, 1990 को सम्पन्न हुई

प्रतिष्ठा

भाग्यशालियों की नामावली

- मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी की प्रतिष्ठा
श्री पारसचन्द्रजी सुरेशचन्द्रजी जैन, बम्बई
- श्री जिनदत्त सूरीजी की प्रतिष्ठा
श्रीमती सोहनकांवर, श्रीमती निर्मला महता, जोधपुर
- श्री जिन कुशल सूरीजी की प्रतिष्ठा
श्री निहालचन्द्रजी, श्रीपालजी, अमोलकचन्द्रजी महता, जोधपुर
- श्री नाकोड़ा भैरवजी की प्रतिष्ठा
श्री भंवरलालजी, भीमराजजी, मोभराजजी बोहरा, वाटभेर
- मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरीश्वरजी की मूर्ति प्रदाता
श्री भैरविहजी अरणकुमारजी चौधरी, जयपुर
- श्री जिनदत्त सूरीजी की मूर्ति प्रदाता
श्रीमती टीकमबाई धर्मपत्नी स्व. श्री पीपीलालजी गोविंदा, जयपुर
- श्री जिनकुशल सूरीजी की मूर्ति प्रदाता
श्रीमती प्रमयांगर श्रीश्रीमान, धर्मपत्नी स्व. श्री हनुमन्तजी भीष्माल, जयपुर
- श्री नाकोड़ा भैरवजी की मूर्ति प्रदाता
श्री पारसमनजी प्रभाकराजी भन्साजी, जयपुर

**गणिवर्य मणिप्रभ सागरजी म. सा. की निश्चा में
मणिधारी दादा गुरुदेव की प्रतिष्ठा पर
अन्य प्रमुख बोलियां लेने वाले महानुभाव**

मुनीमजी	—श्री कीमतीलासजी मिलापचन्दजी जैन, जयपुर
तिलक लगाना	—श्री मानसिंहजी मुनीलकुमारजी श्रीमाल, जयपुर
माला पहनाना	—श्री ज्ञानचन्दजी करमचन्दजी फोफलिया, जयपुर
भगवान महावीर की वेदी विराजमान द्वार खुलवाना	—श्री भेरूदानजी हरकचन्दजी नाहटा, जयपुर —श्री अमरचन्दजी महारचन्दजी धाधिया, जयपुर
ध्वजा चढाना	—श्री हरकचन्दजी नाहटा, दिल्ली
कलश चढाना (दादा गुरुदेव)	—श्री घनपतमलजी राजेन्द्रकुमारजी पट्टवा, जयपुर
नाकोडा भैरव वेदी पर कलश चढाना	—श्री आशुलालजी डोसी, वाडमेर
भालर बजाना	—श्री उत्तमचन्दजी चंपलावत
श्री जिनदत्त सूरीजी की प्रतिमा पर कलश चढाना	—श्री महेन्द्रकुमारजी गोलेछा
श्री जिनकुशल सूरीजी की प्रतिमा पर कलश चढाना	—श्री सीभागमलजी दोरदिया
दादा गुरुदेव की पक्षाल	—श्री कुशलचन्दजी विमलचन्दजी सुराना, जयपुर
दादा गुरुदेव को चन्दन व पुष्प चढाना	—श्री विमलचन्दजी पसारी, जयपुर
नाकोडा भेरूजी की पक्षाल	—श्री देवराजजी जितेन्द्रकुमारजी भूषा, जयपुर
नाकोडा भेरूजी को चन्दन व पुष्प	—श्री पकाशचन्दजी सुभापचन्दजी गोलेछा, जयपुर
दादा गुरुदेव की आरती	—श्री पन्नालालजी विजयकुमारजी वरडिया, जयपुर
मगल दीया चारो जगह	—श्री वसन्तकुमारजी राजेन्द्रकुमारजी पुगलिया, जयपुर
नाकोडा भैरवजी की आरती	—श्री पारसमलजी भन्साली, जोधपुर
सवा लाख अक्वण्ड चावलो का सातिया	—श्री घनश्यामदासजी राजकुमारजी, दिल्ली

(उपरिक्त नामावली 3,000 रु एव अधिक की बोली लेने वाले महानुभावों की है।)

संस्था को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान करने वाले महानुभाव

- श्री पारमचन्दजी सुरेशचन्द्रजी जैन (पंसारी), बम्बई
श्रीमती नेम कंवर श्रीश्रीमाल
श्री सरदारमलजी प्रेमचन्दजी छाजेड़, जयपुर
॥ फतेहसिंहजी वरडिया, जयपुर
॥ दीलतसिंहजी उमरावचन्दजी सचेती, जयपुर
॥ इन्दरचन्दजी प्रकाशचन्दजी पदमचन्दजी सचेती, अजमेर
सैमर्स अणोका फाउन्ड्री एण्ड मैटल वर्क्स, जयपुर
श्रीमती मुमन गर्ग धर्मपत्नी श्री वी. के. गर्ग, जयपुर
सैमर्स एनाइट जैम्स कारपोरेशन. जयपुर
श्री उत्तमचन्दजी सेठिया, जयपुर
॥ विमलचन्दजी मुराना, जयपुर
॥ कमलचन्दजी मुराना, जयपुर
॥ धर्मचन्दजी मेहता, जयपुर
॥ भीमराजजी (गारमेंट एक्सपोर्ट), जयपुर
॥ गिरधरचन्दजी मुषत (ग्राह ट्रेडिंग कम्पनी), गंदर
॥ प्रेमचन्दजी गोलेछा, जयपुर
॥ राजेन्द्रकुमारजी जैन (पंसारी), जयपुर
श्री एन. एम. एन. नागरमलजी दूमरा, जयपुर
श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, जयपुर
सैमर्स मानवर्मा प्रोपर्टी डेवलपर्स, जयपुर
श्री गिरधरमलजी शोटेला, जयपुर
॥ धर्मचन्दजी सेठिया, जयपुर
सैमर्स डिप्लोम एण्ड एगार्स एंड ट्रेडर्स, जयपुर

उन्तजार की घड़ियाँ समाप्त हुईं पविष्टा या दिन भी आ पटुचा । दादा गुरुदेव की भव्य और विराट् प्रतिमा जैसे मात्मान् आशीर्वाद को मुद्रा में अभिवृष्टि कर रही थी । उस प्रतिमा को इस कलात्मकता से निम्बारा गया था कि वह गुरुदेव की उम्र और उनके व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रतिनिधित्व करती थी । प्रतिमा का आराधण अनुष्ठा था उसकी भव्यता गौर कलात्मकता हजारों-हजारों हृदयों को श्रद्धामय बना रही थी ।

निर्धारित समय में सम्पूर्ण विधिविधान और पवित्र अनुष्ठानों सहित उस प्रतिमा को स्थापित किया गया और उस क्षण ऐसी तीव्र अनुभूति हुई कि आज यह प्रतिमा इस स्थान पर नहीं हजारों लाखों हृदय सिंहासनों पर अधिष्ठित हुई है साथ ही प्रस्तुत प्रतिष्ठा समारोह में लिए एक विशिष्ट और गहरी अनुभूति के साथ सर्वदा के लिए स्मृति का अनमोल उपहार बन गया ।

आज भी जवाहर नगर की सांप्रदायिक एक्ता और गुणात्मक आत्मीयता हजारों किलमीटर की दूरी से भी मुझे भावाभिभूत करती है ।

गुरुदेव उनके मधु समाज को निरंतर आध्यात्मिक मन्वन प्रदान करते हुए उनकी भावनात्मक एक्ता को निरंतर प्रबलते रहें ।

दृष्टी शुभाशाशु के साथ ।





प्रस्तावित निर्माणाधीन योजना

- ① भगवान महावीर का शिखरबन्द मन्दिर
- ① स्थानक
- ① पुस्तकालय
- ① औषधालय
- ① भोजनशाला
- ① आयम्बिलशाला
- ① ऊपरी भाग में यात्रियों के टहरने के लिए कमरे
- ① महावीर उद्यान का विकास
- ① सान्द्राधिक भवन का निर्माण
- ① निरट नववाजा

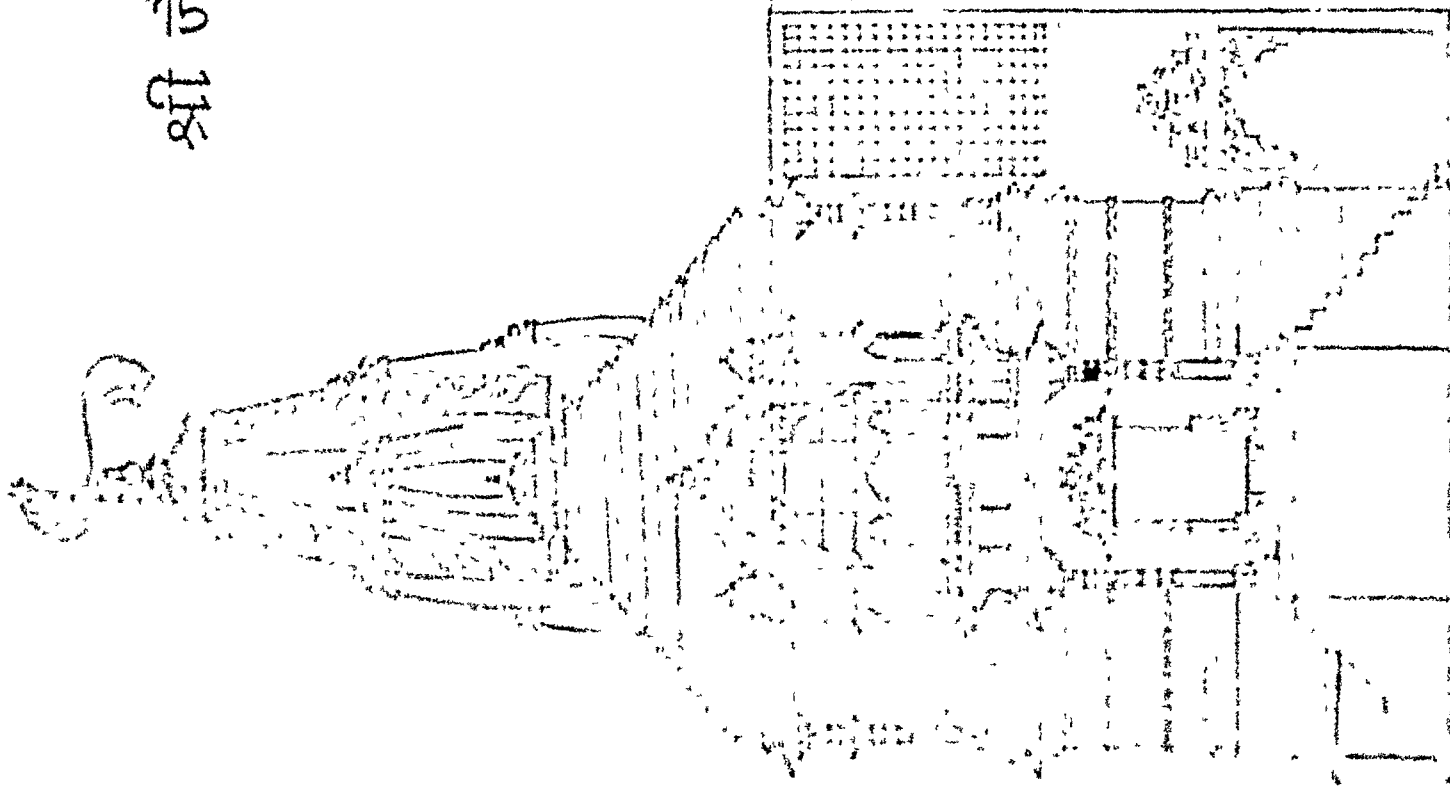
विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
जैन धर्म में कल्याण का सूक्ष्म भाव	—श्री मधु श्री काबरा	58
अनेकांत दर्शन	—डॉ० नरेन्द्र भानावत	62
ले जिनवर का नाम	—गणिवर्ये मणिप्रभ सागर	65
मणिधारी-श्री जिनचन्द्र मुरीजी	—श्री नधमल लोडा 'सेवक'	66
विचक्षण उवाच	—प्रवर्तिनी विचक्षण श्री जी	71
श्रद्धा-सुमन	—कु० कविता जूनीवाल	72
कर्म-शत्रु पर विजय कैसे ?	—श्री सरदारमल छाजेड	73
मुझे मुक्ति दो !	—श्री पदमचंद सिधी	75
मुक्तक	—श्री शशिवर 'खटका' राजस्थानी	76
विदेशों में जैन सिद्धान्त का प्रचार-प्रसार	—डॉ० धनराज चौधरी	77
नर ! तेरा चोला रतन अमोला	—साध्वी मणिप्रभा श्री जी	80
शाकाहार भ्रान्ति में महिलाओं की भूमिका	—डॉ० श्रीमती शांत भानावत	81
श्रापु समान जगत जस चीहा	—साध्वी मणिप्रभा श्री जी	84
जैन इतिहास में पत्नी में	—श्री सुशीलचंद्र सिधी	85
महावीर का अहिंसा दर्शन एवं पर्यावरण संरक्षण	—श्री चिन्मय भट्ट	87
जैन धर्म सिद्धान्त और व्यवहार	—श्री सुधींद्र गेमावत	90
कथनी-करनी एक !	—गणिवर्ये मणिप्रभ सागर	91
व्यवहार और परमाथ	—डॉ० महावीर राज गेलडा	92
गडबड रेडियो	—श्री हेमंत मेहता	94
वही ज्ञान भण्डार !	—गणिवर्ये मणिप्रभ सागर	95
The Jain Declaration on Nature	—Dr L M Singhvi	96
Jain Community Some Sailer Features	—Dr Vilas Sangave	103
Income & Expenditure Account 1989		106
" " " " 1990		110
" " " " 1991		114
" " " " 1992		118
खण्ड द्वितीय		
स्मृतिया जो गेप रह गई		
खण्ड तृतीय		
पारिवारिक परिचय-विवरण		

(1) से (62)

श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर, जयपुर

का

निर्माणाधीन 'महावीर साधना केन्द्र'



श्रद्धांजलि



प्रिय स्व पंकज सिधवी IAS (घयनित)

आप सभी की सखेदना एव सहानुभूति के लिए
हम हृदय से आभादी है ।

पनपतराज मेहता

सवाईसिंह सिधवी

- उत्तम आनन्द डेरी एन्टरप्राइजेज
- आनन्द एजेन्सी
- उत्तम आनन्द एकरूपोर्टस्
- आनन्द मोटर्स

D-35 पत्रकार कालोनी राजागार्क जयपुर-302 004

ग्राम "श्रमिलावा जयपुर"

फोन 40726, 43163, 515489